While talking to him, I never felt that he belonged to the Harijan class or that I belonged to some other class. I felt that both of us belonged to the same class and that class was the class of humanity. That was the impression he always gave. He was a gentleman, a first-rate gentleman, and I cannot forget his friendly disposition. To sit with him even for two or three minutes was to feel an impact of his generous disposition and of his habit of thinking and his habit of mixing with other persons on a very equal level.

Now that Punjab is being reorganised, I think he would have proved to be a very fine bridge between the Punjab State as it will be reorganised now and Hariana *prant.* I think he would have proved to be a very durable, fine and strong common link in terms of human beings between the reorganised State of Punjab and the reorganised State of Hariana.

We all feel very unhappy about this very sad loss that has occurred. I do agree with Shri Bagri that our Parliament, our Government, should do something for the children of such persons who rise from the ranks and rise to the highest positions but who do not leave much of worldly goods when they pass away from this world. Life hangs by a slender thread and I think Shri Chuni Lal's passing away proves this statement much more than anything else.

I join with you and other friends who have paid their tributes to the departed friend.

The Leader of the House (Shri Satya Narayan Sinha): Mr. Speaker, we all heard with great shock and surprise the extremely sad news of the untimely demise of a sitting Member of this House, Shri Chuni Lal, who represented a reserved Constituency, Ambala, Punjab, in the Lok Sabha.

Shri Chuni Lal was so young and apparently hale and hearty that it is difficult to imagine how death laid its cold, icy hands on him. He was a quiet and unassuming person who did considerable constructive work for the uplift of the backward classes and rural areas. For sometime, he was also a Member of the Estimates Committee.

On behalf of the Congress Party and on my own behalf also, I join in conveying our condolences to the bereaved family.

Mr. Speaker : The House may stand in silence for a short while to express its sorrow.

The Members then stood in silence for a short while.

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

त्रिदेशीय शिखर सम्मेलन

+

*719. श्री नवल प्रभाकर :
श्री हेम बरुआ :
श्री हरि विष्णु कामत :
श्री सुरेंद्रनाथ द्विवेदी :
श्री नाथ पाई :
श्री विश्वनाथ पाण्डेय :
श्री नम्बियार :
श्री कोल्ला वेंकैया :
श्री विभूति मिश्र :
श्री क० ना० तिवारी :
श्री सिद्धेश्वर प्रसाद :
श्री श्री नारायण दास :
डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी :
श्री प्र० चं० बरुआ :
श्री ही० ना० मुकर्जी :
श्री बागड़ी :
डा० राम मनोहर लोहिया :
श्री मधु लिमये :
श्री राम सेवक यादव :
श्री मौर्य :
श्री किशन पटनायक :
श्री विश्वनाथ राय :
श्री कृ० चं० शर्मा :
श्री लहटन चौधरी :

श्री यशपाल सिंह :
श्री हुकम चन्द कछवाय :
श्री रामेश्वरानन्द :
श्री रघुनाथ सिंह :
श्री नि० रं० लास्कर :
श्री रा० बरुग्रा :
श्री लीलाधर कटकी :
श्री राम सहाय पाण्डेय :
श्री वासुदेवन नायर :
डा० रानेन सेन :
श्री गुलशन :
श्री तुलाराम :
श्री प्रकाशवीर शास्त्री :
श्री ग्रोंकार लाल बेरवा :
श्री द्वारका दास मंत्री :
श्री मॅं० क० कुमारन् :
श्री इन्द्रजीत गुप्त :
श्री प्र० रं० चक्रवर्ती :
श्री हु० चा० लिंग रेड्डी :
श्री पं० वेंकटासुब्बया :
श्री रवीन्द्र वर्मा :
श्रीमती राम दुलारी सिन्हा :
श्री दी० चं० शर्मा :
श्री म० ना० स्वामी :
श्री सुरेन्द्रपाल सिंह :
श्री बृजवासी लाल :

क्या वैदेशिक-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यूगोस्लाविया, संयुक्त ग्ररब गणराज्य तथा भारत के नेताग्रों ने तीनों देशों का एक शिखर सम्मेलन ग्रायोजित करने का निर्णय किया है ; ग्रौर

(ख) यदि हां, तो यह सम्मेलन कब तथा कहां ग्रायोजित किया जायेगा ?

वैदेशिक-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दिनेश सिंह) : (क) जी, हां ।

(ख) सम्मेलन का ग्रायोजन नई दिल्ली में 21 से 25 ग्रक्टूबर 1966 तक किया गया है ।

श्री नवल प्रभाकर : क्या मैं जान सकता हूं कि क्या इसके लिये कोई कार्य सूची तैयार कर ली गई है ? यदि हां, तो वह क्या हैं ?

श्री दिनेश सिंह : जी, नहीं, इसके लिये कोई ग्रजेन्डा तय नहीं हुग्रा है ।

श्री नवल प्रभाकर : जो बात-चीत होगी, उस का ग्राधार क्या होगा ?

श्री दिनेश सिंह : बात चीत जो ग्राजकल ग्रन्तर्राष्ट्रीय समस्यायें हैं उन पर होगी ।

Shri Hem Barua : The hon. Minister has just now said that the present international situation will be discussed in the summit conference. In that context, may I know whether our dispute with China is going to be discussed, and if so, whether because of the well-known proclivities or friendly inclinations of UAR for China on account of which the UAR did not even come out with moral support when China aggressed on us, Government are in a position to tell us that they would be able to bring round both UAR and Yugoslavia to our way of thinking so far as our dispute with China is concerned ?

Shri Dinesh Singh : It is not our intention to discuss any bilateral disputes in this meeting, but certainly our coflict as it reflects certain dangers in this part, and also certain wider aspects of the ideological conflict will certainly be considered.

Shri Hem Barua : The hon. Minister stated that there is no intention to discuss bilateral disputes, but this bilateral dispute with China forms part of international security today. Therefore, why is it neglected ? Our national interests must come first.

Mr. Speaker ; Now he si arguihg.

Shri Hem Barua : Why is it that in this conference we are neglecting our own interests and going about beating about the bush ? What has the Prime Minister to say about it ?

श्री किशन पटनायक : मंत्री महोदय ने अभी बतलाया कि यह एक शिखर सम्मेलन है । तो पहली बात तो मैं यह जानना चाहता हूं कि यह शिखर किस के मुकाबले में है । किन इलाकों का, किन तबकों का शिखर है । दूसरी बात यह है कि क्या कुछ अन्य देशों के साथ, जैसे कि जो पड़ौस के देश हैं, उन के साथ भी इस सम्मेलन के सम्बन्ध में कोई सलाह ली गई है या खत किताबत की गई है ताकि उन की क्या दिलचस्पी है इस सम्मेलन में या उन के क्या सुझाव हैं इस पर भी यह सम्मेलन विचार कर सके ।

श्री दिनेश सिंह : शिखर शब्द का प्रयोग मैं ने नहीं किया है, यह तो माननीय सदस्यों ने किया है, जिन्होंने यह सवाल पूछा है । शिखर किसी के मुकाबले में होता है ऐसी बात नहीं है । शिखर जैसा सब जानते हैं चोटी होती है और खुद अपने आप होती है । तीन देश के लोग मिलेंगे । उन में से दो अपने यहां के प्रेजिडेंट हैं, और एक हमारी प्रधान मंत्री हैं । तीनों यहां पर मिलकर बात करेंगे । जहां तक बातों का सम्बन्ध है, अभी श्री हेम बरुआ जी ने इस प्रश्न को उठाया था और मैं ने पहले ही अपने जवाब में कहा कि जो बड़े सवाल हैं वह आयेंगे । लेकिन इन सब बातों में यह कहना बड़ा मुश्किल है कि क्या हम कहेंगे और क्या वह कहेंगे । इसीलिये कोई अजेन्डा तैयार नहीं किया गया है । खाली बात रक्खी गई है । जो खास बातें उस वक्त लोगों के दिमाग में होंगी उन के बारे में वह खुलासा और बिना किसी रुकावट के कह सकेंगे ।

श्री किशन पटनायक : मैं ने पूछा था कि अन्य किसी देश के साथ क्या कोई बातचीत हुई है ।

श्री दिनेश सिंह : मैं माफी चाहता हूं, मैं इस को भूल गया । इन तीनों देशों के बीच में हमेशा से बातें होती रही हैं । सदन को स्मरण होगा कि 1956 में ब्रियोनी में यह तीनों देश के नेता मिले थे । बाद में सन् 1961 में भी मिले थे । इसलिये इस मीटिंग के सम्बन्ध में किसी से राय करने का कोई सवाल नहीं उठता । लेकिन और देशों ने इस के बारे में कुछ बात चीत की थी क्योंकि पहले यह बात उठाई गई थी कि शायद यह नान-अलाइन्ड समिट की तैयारी के लिये हो रहा है । हम ने उन से बात कर के समझाया कि यह कोई नान-अलाइन्ड नेशन्स की मीटिंग करने के लिये नहीं हो रहा है बल्कि तीनों देशों के बीच में आपस में बात हो रही है ।

श्री विश्वनाथ पाण्डेय: अभी मंत्री महोदय ने बतलाया कि यूगोस्लाविया, संयुक्त अरब गणराज्य और भारत के नेताओं के बीच में एक शिखर सम्मेलन हो रहा है, लेकिन इस शिखर सम्मेलन के लिये कोई कार्य-सूची निश्चित नहीं की गई है । मगर जहां तक समाचारपत्रों में प्रकाशित हुआ है यूगोस्लाविया और संयुक्त अरब गणराज्य के जो नेता हैं उन्होंने भारत सरकार से संकेत किया है कि कोई ठोस कार्य सूची रक्खी जाये ताकि हम लोग निर्णय ले कर के कोई ठोस विचार बना सकें । अगर यह बात सही है तो इस सम्बन्ध में सरकार की क्या प्रतिक्रिया है ?

श्री दिनेश सिंह : जी, नहीं ।

श्री मौर्य : अध्यक्ष महोदय, मेरी व्यवस्था सम्बन्धी आपत्ति है । अब तक इस सदन की यह परम्परा रही है कि जब सदन चल रहा हो और सदन के किसी सदस्य का देहान्त हो जाये तो सदन को उस दिन के लिये स्थगित कर दिया जाता है ।

अध्यक्ष महोदय : इस के सम्बन्ध में सदन का फैसला हो चुका है ।

Shri Indrajit Gupta : Only very recently our Prime Minister visited both UAR and Yugoslavia and had talks with President Nasser, as well as Marshal Tito, and joint communiques were also issued covering all the important international issues. In view of the recent talks which have already taken place, may I know what were the special reasons for which it was felt necessary that so soon after that there should again be a meetting where all the three should sit together ? Is it becaause of the special urgency of the Vietnam issue or some other reason ?

Shri Dinesh Singh : Actually this meeting had been decided upon before the Prime Minister went to these two places. Apart from that there have also been consultations between President Nasser and President Tito, between our Prime Minister and these two Presidents; it will be useful for the three of them to have a discussion of these matters together.

Shri D. C. Sharma : By whatever name one may choose to call this conference, one could not deny the fact that it is going to be a conference of three non-aligned nations, one in Europe, the other in Africa and the third in Asia. May I know if at this conference any programme will be devised by means of which the cause of non-alignment which is suffering every day some kind of set-back will come to the fore again in this world and the world will heave a sigh of relief from the conflicts and turmoil whichare agitating the Universe at this time ?

Shri Dinesh Singh : It is true that the three countries which would be meeting are important non-aligned countries ; there is no question about it. What I had said earlier was that this was not a prrep ra tory meeting for a non-aligned conference; of course we hope that important matters concerning non-alignment and effective steps that could be taken to strengthen it will be discussed.

Shri Shree Narayan Das: Since this proposal for having this tripartite summit conference had been mooted, has the Government been observing the reactions which are produced in other smaller countries of the Afro-Asian area and is it a fact that the reaction has not been quite favourable in views of the fact that a limited number of nations are going to meet here and discuss some of the international problems ?

Shri Dinesh Singh : This is what I explained a little earlier that some people had tried to create this misunderstanding; that has been cleared and there is no adverse reaction.

श्री बूटा सिंह : यह जो शिखर सम्मेलन हो रहा है तीन देशों का—मैं यह जानना चाहता हूं कि सरकार के मन में वह कौन सा प्रेम है—श्राया हिंदुस्तान की ग्रन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को सुधारने के लिये या सारे संसार की ग्रन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को सुधारने के लिये हो रहा है ? यदि यह भारत की ग्रन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को सुधारने के लिये हो रहा है तो सरकार इन के नतीजों से कहां तक ग्राशा रखती है ?

श्री दिनेश सिंह : भारत की ग्रन्तर्राष्ट्रीय स्थिति की बात मैं कुछ समझा नहीं ? ग्रध्यक्ष महोदय, यह जो बैठक हो रही है तीनों देशों के लोगों की, मैंने जैसा ग्रभी ग्रर्ज किया, वह विश्व के जो गम्भीर विषय हैं उन पर विचार करेगी।

श्रीमधु लिमये : ग्रध्यक्ष महोदय, मैं यह जानना चाहता हूं कि इस ग्रागामी त्रिराष्ट्रीय सम्मेलन के सामने क्या रोडेशिया की जनता को सहायता करने तथा पूर्वी बंगाल की जनता, जो स्वतंत्र ा के लिये लड़ रही है, उन को मदद करने का विषय भी इस बैठक की विचार सूची में समाविष्ट किया जायगा ?

श्री दिनेश सिंह : रोडेशिया का विषय, मैं समझता हूं, इस में अवश्य आयेगा ।

श्री विभूति मिश्र : अध्यक्ष जी, ये सम्मेलन पहले भी बराबर होते आये हैं, पण्डितजी जब जीवित थे, तब भी हुआ और अब भी होने जा रहा है । मैं जानना चाहता हूं कि मित्रता के मायने यह हैं कि हम पर कोई विपत्ति हो तो हमारा मित्र हमारी मदद करे और उसकी विपत्ति पर हम उसकी मदद करें, तो चीनी हमले या पाकिस्तानी हमले के समय इन देशों ने हमारी क्या मदद की है ? यदि मदद नहीं की है, तो मेरी समझ में नहीं आता कि इस प्रकार सम्मेलन की क्या जरूरत है ? हम राजनीति में महाभारत जैसे शास्त्रों को पढ़ते हैं, मैं जानना चाहता हूं कि क्या इस प्रकार की मित्रता से देश को कोई लाभ है, यदि है तो वह क्या है ?

श्री दिनेश सिंह : इन दोनों देशों ने हमारी मदद नहीं की है, ऐसा कहना, मैं समझता हूं, मुनासिब नहीं होगा । जहां तक सम्भव है, इन्होंने हमारी मदद की है, लेकिन वह काफी नहीं थी या ज्यादा करनी चाहिये, यह अलग-अलग लोगों की अपनी राय हो सकती है । मैं नहीं समझता कि इस के बारे में मैं कुछ विशेष कह सकता हूं . . . .

श्री विभूति मिश्र : क्या मदद की है, बतायें तो ?

अध्यक्ष महोदय : आर्डर, आर्डर, इस के बहस में नहीं जाना चाहिये ।

श्री दिनेश सिंह : हमारी नीति है कि हमारा प्रयत्न रहना चाहिये कि जिस तरह से भी हम दोस्ती को मजबूत कर सकें, उसके लिये कोशिश करनी चाहिये ।

Shri Kolla Venkaiah : In view of the differences between our Government and the Government of the UAR and in view of the fact that President Nasser has openly condemned the American air raids in Vietnam while our Prime Minister has just appreciated the faith of the President of the United States in peace in Vietnam, and in view of the fact that the President of the UAR has expressed that the Chinese activities, as far as Africa is concerned, are in no way improper while our spokesmen express differently, may I know whether Government propose to discuss all these differences either in the conference or in the bilateral talks with UAR ?

Shri Dinesh Singh : With due respect to the hon. Member, I would like to point out that this basis is completely wrong : there is no difference. I think these differences are being attempted to be projected by a certain country whose newspapers he probably reads.

श्री सिद्धेश्वर प्रसाद : अध्यक्ष महोदय, हम लोगों को सवाल पूछने का मौका नहीं मिला ।

अध्यक्ष महोदय : ठीक है ।

Rev. Michael Scott

*720. **Shri Madhu Limaye** : Will the Minister of **External Affairs** be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 1556 on the 9th May, 1966 and state :

(a) whether Rev. Michael Scott forwarded the Naga Underground's letter to the Burmese Government on his own or in consultation with/or with the consent of the other two members/or either of the two members of the now defunct Peace Mission : and

(b) if the reply to part (a) above be in the affirmative, the action taken by Government against the other Peace Mission Member/or Members ?

The Minister of State in the Minitry of External Affairs (Shri Dinesh Singh): (a) As already stated by the Foreign Minister on the floor of the House in